भगवान का कोई रूप नहीं है। इसका मतलब यह जरूर है कि ईश्वर सभी भौतिक या सांसारिक रूपों से परे है लेकिन इसका मतलब ये नही है कि ईश्वर का कोई अलौकिक रूप नही हो सकता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान का कोई रूप नहीं है इस कथन का एक और निहितार्थ है। इसका अर्थ यह भी है कि पूर्णता प्राप्त करने पर ईश्वर का अनुभव केवल अनंत सुख की अनुभूति तक सीमित है। उदाहरण के लिए, जब इत्र का छिड़काव किया जाता है, तो सुगंध की अनुभूति होती है, इसका कोई रूप नहीं होता है। इसी प्रकार ईश्वर आनंद का अनुभव है। उसकी कोई रूप नहीं है। इसे बिना रूप का भगवान या निराकार भगवान कहा जाता है।

यह सर्वविदित है कि सभी संतों में दिव्य शरीर होता है जिसमें सभी धर्मों के सभी संस्थापक भी शामिल हैं। आइए हम मोहम्मद पैगंबर पर विचार करें।

हम सभी इस बात से सहमत हैं कि वह एक ईश्वरीय और एक दिव्य व्यक्तित्व था। उनको भगवान ने इस संसार में भेजा था। दिव्य या ईश्वरीय का अर्थ है जो समझ से परे हो।दिव्य व्यक्तित्व सभी संतों के पास होता हैं। क्या उन मोहम्मद पैगंबर का शरीर नही था? क्या उनका कोई रूप नहीं था? मतलब दिव्य संतों के पास रूप है तो दिव्य ईश्वर को रूप ग्रहण करने से कौन रोक सकता है? जब भगवान अपने संतो को रूप देकर इस दुनिया में भेजता है तो खुद भी रूप धारण कर सकता है। इसलिए भगवान के पास रूप होना चाहिए और यह रूप दिव्य होना चाहिए।

इसका अर्थ है कि भगवान का सांसारिक रूप नहीं हो सकता है, लेकिन भगवान का दिव्य रूप हो सकता है और भगवान का दिव्य रूप होता है। दिव्य शब्द का अर्थ है कि भगवान का रूप बुद्धि की सीमा से परे है। वह किसी भी या सभी रूपों को ले सकता है जो उसने इस भौतिक दुनिया में दूसरों को दिए हैं या नही दिए है। इस प्रकार ईश्वर सीमित क्षमता का नहीं है कि वह दूसरों को रूप दे सकता है, लेकिन वह स्वयं को रूप नहीं ले सकता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब मोहम्मद साब मौजूद थे, तब वे मानव रूप में मौजूद थे। सभी ने उसे मानव रूप में देखा। सभी ने उसे दिव्य रूप में नहीं देखा। केवल कुछ लोगों ने उसे दिव्य रूप में देखा क्योंकि उनके दिल शुद्ध थे। बाकी सभी ने उसे एक सामान्य व्यक्ति के रूप में देखा।

इसी प्रकार, ईश्वर का दिव्य रूप है लेकिन जब वह इस धरती पर प्रकट होता है तो वह सांसारिक रूप में अधिकांश लोगों के दिखाई देता है क्योंकि केवल वे लोग जिनका हृदय शुद्ध हैं वे ही ईश्वर के दिव्य रूप को देख सकते है।

किसी भी मूर्ति का भौतिक रूप होता है, लेकिन जब भगवान उस रूप में प्रकट होंगे तो दिव्य रूप में प्रकट होंगे , जिसका बाहरी रूप मूर्ति के समान होगा। उपासक भगवान को उस रूप में देखेगा जिस रूप में उसने मूर्ति की पूजा की थी। इसलिए, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए मूर्ति भगवान की है।